❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को योगिराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की

हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 42, अंक 38 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 12 अगस्त, 2019 से रविवार 18 अगस्त, 2019

विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120

दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

29वां आर्य महासम्मेलन, शिकागो: 25-28 जुलाई, 2019 सम्पन्न

आर्यसमाज के कार्यों और बड़ी योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए अमेरिका में बनेगा विशाल आर्य सेंटर

आर्य सेंटर की स्थापना हेतु 30 एकड़ भूमि दान की घोषणा

महाशय धर्मपाल जी ने "VDAT" कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए दिया आशीर्वाद

परिवारों, युवाओं और बच्चों को आर्यसमाज के साथ जोड़ना समय की सबसे बड़ी जरुरत

'वैदिक संस्कृति स्कूल' प्रोजेक्ट आर्यसमाज को बड़ी जरुरत : प्रत्येक आर्यसमाज इसे कार्यप्रणाली का भाग बनाए - *देव महाजन*

आर्य समाज एक विश्वव्यापी संगठन

- विश्रुत आर्य, प्रधान

आर्यसमाज का उद्देश्य-मानवसेवा

- भुवनेश खोसला, महामंत्री

अमेरिका में आयोजित होगा वर्ष 2022 का विराट अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्त्वावधान में शिकागों लैंड अमेरिका में 25 से 28 जुलाई 2019 के दौरान 29वां आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में देश और विदेशों से सैंकड़ों आर्यजनों की गरिमामयी उपस्थिति के साथ-साथ संन्यासीवृंद, आर्य नेता, विद्वान, प्रवक्ता, आर्य नर-नारी और उपस्थित युवा शक्ति विशेष रूप से आकर्षण का केंद्र रही। सम्मेलन में विभिन्न शोधपरक विषयों पर प्रवचनों के साथ-साथ कई प्रेरणाप्रद कार्यशालाओं के सफल आयोजनों से सम्मेलन की भव्यता में चार चांद लग गए। इन कार्यशालाओं में संध्या, आर्य समाज संगठन के रूप में सशक्तिकरण एवं कार्य दक्षता को बढ़ाने के उपाय, अमेरिका में धार्मिक संस्थानों की सुरक्षा के उपाय, ध्यान की सरल विधि और उसके लाभ, वैदिक संस्कृति स्कूलों की स्थापना तथा उनके संचालन की रूपरेखा आदि पर गहन चिंतन-मनन किया गया और कार्यशालाओं के माध्यम से जन भागीदारी भी सुनिश्चित की गई।

इस अवसर पर आर्य जगत के देश विदेश से पधारे विभिन्न नेतागण, संन्यासी गण और विद्वज्जन उपस्थित हुए। इनमें मुख्य रूप से स्वामी आर्यवेश जी, श्री विनय आर्यजी, श्री अरुण अबरोलजी, स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री विश्रुत आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका, श्री भुवनेश खोसला महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका, डॉक्टर सोमदेव जी शास्त्री, आचार्य हरिप्रसाद जी, डॉ. अमरजीत जी शास्त्री, आचार्य ब्रह्मदेव जी, आचार्य डॉक्टर सूर्यनारायण नंदा, आचार्य वेदश्रमी जी ,आचार्य दर्शनानंदजी, डॉक्टर सिद्धार्थ जी, आचार्या जाह्नवी जी, स्वामी संपूर्णानंद जी, श्री धर्मपाल जी शास्त्री, डॉ. रमेश गुप्ता जी, डॉ. राजेंद्र गाँधी जी, डॉ. दीनबंधु चन्दोरा जी, डॉ. सुधीर आनंद जी, डॉ. सूची खोसला, इत्यादि प्रमुख थे। इसके अतिरिक्त समाज एवं राजनीति से जुड़े विशिष्ट व्यक्तियों की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। शिकागो में भारतीय दूतावास से श्री सुधाकर दलेला,और अन्य दूतावासों के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

ध्वजारोहण:- आर्य महासम्मेलन में युवा वर्ग की भागीदारी अत्यंत प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय रही। युवाओं ने सामूहिक रूप से ध्वजारोहण किया एवं ध्वजगीत गायन से सभी आर्यजनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर श्लोक एवं वेद मंत्रों के उच्चारण से संपूर्ण वातावरण महक उठा। छोटे बच्चों में भी सस्वर वेद पाठ कर उपस्थित आर्यजनों को भावविभोर कर यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि अमेरिका जैसी आधुनिक सुविधा संपन्न

- शेष पृष्ठ 7 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनधि सभा उत्तर प्रदेश के संयुक्त तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

11, 12, 13 अक्तूबर, 2019 (शुक्र-शनि-रविवार)

तद्नुसार आश्विन शुक्ल 13-14-15 विक्रमी सं. 2076

चौधरी लॉन्स, बी.एच.यू.-सुन्दरपुर रोड, नरिया, लंका, वाराणसी (उ.प्र.)

(महासम्मेलन की विस्तृत जानकारी एवं यात्रा कार्यक्रम के पृष्ठ 5 एवं 7 देखें)

वेद-स्वाध्याय

मायावी की माया द्वारा ही उसका नाश

मायाभिरिन्द्र मायिनं त्वं शुष्णमवातिरः।
विदुष्टे तस्य मेधिरास्तेषां श्रवांस्युत्तिर।। - ऋ० 1/11/7
ऋषिः जेता माधुच्छन्दसः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः विराडनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - इन्द्र = हे परमेश्वर! **त्वम्** = तुम **मायिनम्** = मायावाले, बड़े कपटी **शुष्णम्** = शोषण करनेवाले राक्षस को **मायाभिः** = मायाओं द्वारा ही **अवातिरः** = नीचे कर देते हो, विनष्ट कर देते हो। **ते** = तुम्हारे **तस्य** = उस रहस्य को **मेधिराः** = मेधावाले ज्ञानी लोग ही **विदुः** = समझते हैं, तुम अब **तेषाम्** = उनके **श्रवांसि** = अन्नों को, सत्त्वों को, यशों को **उत्तिर** = ऊँचा कर दो, उनका उद्धार कर दो।

विनय-हे परमेश्वर! तेरे इस संसार में शुष्ण असुर भी उत्पन्न हुआ करता है। यह वह मनुष्य व मनुष्यसमूह होता है जो दूसरों के शोषण पर, चूसने पर, अपना निर्वाह करता है। यह बड़ा मायावी होता है। यह दूसरों के रक्त का शोषण बड़ी गहरी माया से, बड़े छल-कपट से करता है। यह ऐसे प्रबन्ध से काम करता है, ऐसा ढङ्ग रचता है कि हमें अपना कुछ भी अनिष्ट होता हुआ पता नहीं लगता, किन्तु चुपके-चुपके हमारे सब सत्त्व, सब विद्या, सब सम्पत्ति का अपहरण होता चला जाता है। इसकी माया के अच्छी प्रकार फैल जाने पर तो यह अवस्था आ जाती है कि इस शुष्ण असुर के शिकार हुए लोग ऐसे मुग्ध हो जाते हैं कि वे स्वेच्छा से, प्रसन्नता से, अपने को चुसवाते, शोषित करवाते जाते हैं, परन्तु हे इन्द्र! तू इस मायावी महा-असुर को मायाओं द्वारा ही विनष्ट कर देता है। तेरा जगद्विधान इतना सच्चा और परिपूर्ण है कि इसमें माया की अपने-आप प्रतिक्रिया होती है, माया अपनी प्रतिद्वन्द्वी माया को पैदा कर अपना आत्मघात कर लेती है। चालें चलनेवाला आखिर अपनी चालों से ही मारा जाता है। तेरी सच्ची माया (प्रज्ञा) के सामने शुष्ण की झूठी माया विलीन हो जाती है, पर तेरे इस सृष्टि के रहस्य को, तेरे इस सामर्थ्य को, विरले मेधावाले ज्ञानीजन ही जानते हैं। शेष साधारण लोगों को तो जब इस भयंकर शोषण का पता लगता है तो वे घबरा उठते हैं और समझने लगते हैं कि इस संसार में कोई इन्द्र नहीं, परमेश्वर नहीं, कोई गरीबों की आह सुननेवाला नहीं, किन्तु ये 'मेधिर' लोग श्रद्धा-भरी आँखों से तेरी ओर देखते हुए अपना काम करते जाते हैं, पर हे इन्द्र! अब तो बहुत देर हो चुकी, शुष्ण राक्षस का उपद्रव पराकाष्टा को पहुँच चुका। पीड़ितों की सुधि तुम और कब लोगे? ये देखो, चुसते-चुसते अब यहाँ क्या बचा है? मेधावी लोग अब एकमात्र तुम्हारी ओर टकटकी लगाये देख रहे हैं। अब तो तुम छिनते जाते गरीबों के पेट के अन्नों का उद्धार कर दो, नष्ट होते जाते उनके सत्त्वों का रक्षण कर दो। शुष्ण की माया को छिन्न-भिन्न करके इससे ढके पड़े सज्जनों के यज्ञों को फिर सुप्रकट कर दो। प्रभो! अब तो हद हो चकी है। हे इन्द्र! तुम्हारा इन्द्रत्व और किस समय के लिए है?

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

73वें स्वाधीनता दिवस पर दिखे राष्ट्र भक्ति के अनूठे रंग

पुण्यमय भारत देश ने अपना 73वां स्वाधीनता दिवस पूरे उमंग, उल्साह और उल्लास से मनाया। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक सभी भारतवासी राष्ट्रभक्ति के रंग में रंगे हुए दिखाई दिए। सभी सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं ने देश की आन-बान और शान का प्रतीक तिरंगा लहर-लहर लहराया। भारत माता की जय, वंदेमातरम और जय हिंद के नारों के बीच राष्ट्रगान अत्यंत भक्ति भाव से गाया गया। यूं तो हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी भारत की राजधानी दिल्ली के ऐतिहासिक लालकिले की प्राचीर से देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने तिरंगा झंडा फहराया, देश के शहीदों को याद करते हुए सभी देशवासियों को स्वाधीनता दिवस की बधाई दी और राष्ट्र को अपनी चिर परिचित शैली में ओजस्वी और सारगर्भित उद्बोधन दिया। लेकिन इस बार 73वां स्वाधीनता दिवस कई मायनों में बहुत खास रहा। पिछले 72 वर्षों से देश की एकता और अखंडता को चिढ़ाती हुई कश्मीर में लागू धारा-370 और ए-35 का समापन स्वाधीनता दिवस से 10 दिन पूर्व ही हो गया था। कई लोगों ने इसे अगस्त क्रांति के महीने में एक विशेष दिवस के रूप में स्मरण किया, इसी वर्ष कश्मीर के पुलवामा में अपने शहीद हुए जवानों की शहादत का बदला एयर स्ट्राइक के माध्यम से दुश्मनों के घर में घुसकर ठिकानों को तबाह करके लिया गया। इसी वर्ष देश की मुस्लिम महिलाओं को तीन तलाक जैसी अपमान जनक कुरीति के कुचक्र से भी आजादी मिली।

देश की आजादी में आर्य समाज का बड़ा योगदान

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं ने स्वाधीनता दिवस को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया । इस अवसर पर विशेष यज्ञों के आयोजन किए गए, राष्ट्रीय ध्वज लहराया गया और विशेष संगोष्ठियों के आयोजन कर अपने अमर शहीदों को याद किया। यह ज्ञात हो कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का सबसे बड़ा योगदान रहा। देश पर मर-मिटने वाले अमर शहीदों में 80 प्रतिशत लोग आर्य समाज से जुड़े थे। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने राष्ट्रधर्म को सर्वोपरि मानते हुए अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में धर्म, समाज और राष्ट्र के प्रति सत्य विचारों का जो संदेश दिया वह मानवमात्र के लिए अनुकरणीय और विचारणीय है। महर्षि दयानंद जी की उद्घोषणा सर्वविदित है कि "कोई कितना भी करे किंतु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि सर्वोतम होता है" महर्षि के इन्हीं प्रेरक विचारों से प्रेरित होकर अनेको बलिदानियों ने अपना सर्वस्व देश की आजादी में समर्पित कर दिया था। उन सभी अमर शहीदों को 73वें स्वाधीनता दिवस पर हम पूरी निष्ठा से याद करते हैं।

राष्ट्र के प्रति जगाए-मन में प्रेम

दुनिया में जिन्होंने केवल अपने रिश्तेनातों को ही नहीं बल्कि अपने देश को ही अपना परिवार समझकर प्रेम किया है,आज उन्हें ही सम्मान से याद किया जाता है। दुनिया में चाहे कितने भी अस्त्र-शस्त्र निर्मित कर लिए जाएं, उन अस्त्र-शस्त्र के निर्माण करने वालों को भी अगर किसी से डर लगता है तो देश प्रेमियों से ही उनकी रूह कांपती है। हमारे देश में जब-जब संकट के क्षण आए, तब-तब देश प्रेमियों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। सन् 1857 से लेकर 15 अगस्त 1947 के स्वाधीनता दिवस तक हमारे देश के अनगिनत देश प्रेमियों ने भारत माता की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व-न्यौछावर किया। इसलिए तो जब-जब हमारे देश में राष्ट्रीय पर्व मनाए जाते हैं, तब-तब देशप्रेमियों को नमन किया जाता है। उनके बलिदान को स्मरण किया जाता है, उनके अविस्मरणीय देश प्रेम से प्रेरणा प्राप्त की जाती है।

.....आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने राष्ट्रधर्म को सर्वोपरि मानते हुए अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में धर्म, समाज और राष्ट्र के प्रति सत्य विचारों का जो संदेश दिया वह मानवमात्र के लिए अनुकरणीय और विचारणीय है। महर्षि दयानंद जी की उद्घोषणा सर्वविदित है कि "कोई कितना भी करे किंतु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि सर्वोतम होता है" महर्षि के इन्हीं प्रेरक विचारों से प्रेरित होकर अनेको बलिदानियों ने अपना सर्वस्व देश की आजादी में समर्पित कर दिया था। उन सभी अमर शहीदों को 73वें स्वाधीनता दिवस पर हम पूरी निष्ठा से याद करते हैं।.....

अमर शहीद देश प्रेमियों को शत्-शत् वंदन

आज फिर देश की माटी को प्रेम करने वाले महान वीर चाहिए, देश में जो अराजकता का वातावरण है उसे समाप्त अगर कोई शक्ति कर सकती है तो वह देश के प्रति प्रेम की उदात्त भावना से ही संभव है। क्योंकि जहां प्रेम होता है, वहां स्वार्थ नहीं होता, परमार्थ होता है और परमार्थ ही प्रेम का सच्चा स्वरूप है। हमारे देश पर हजारों वर्षों तक गैरों ने राज किया, इस लंबी दासता से अगर मुक्ति मिल पाई है तो उन देश प्रेमियों की बदौलत ही मिल पाई है जिन्होंने घास की रोटी खाकर भी वीरता को जीवित रखा और जिन्होंने फांसी के फंदे को ही अपने गले का हार बना लिया, जिन्होंने जन्म देने वाली मां से बढ़कर अपनी भारत माता को प्रेम किया, भारत माता के बंधनों को काटने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, भारत के 73वें स्वाधीनता दिवस पर उन देशप्रेमियों को शत्-शत् वंदन है। उन देश प्रेमियों में चाहे सुभाष चन्द्र बोस हो अथवा चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल हो या असफाक उल्ला खां, महाराणा प्रताप हो या रानी लक्ष्मी बाई, राज गुरु, सुखदेव, भगत सिंह हों अथवा छोटी सी उम्र में देश के लिए मर मिटने वाली वीरांगना मैना सभी अमर शहीदों को शत्-शत् नमन, उनके देशप्रेम को कोटिशः नमन। आज की युवा पीढ़ी से निवेदन है कि देश को प्रेम चाहिए, अपने क्षुद्र स्वार्थ भाव को आड़े मत आने दो, अपने प्रेमभाव का विस्तार करो, अपने विषय में तो सोचो ही, लेकिन थोड़ा देश के लिए भी विचार करो, अनेक तरह से देश के सामने चुनौतियां हैं, उनका सामना बहादुरी से करने को तैयार हो जाओ, भारत संपूर्ण विश्व का गुरु था, पुनः अपना गौरव हासिल करने के लिए प्रयास करो।

- सम्पादक

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

कश्मीर में सना मुफ्ती के नाम खुला पत्र

प्रिय सना मुफ्ती!
खुश रहो!

जब से हमें पता चला कि आपने राजनीति शास्त्र की पढ़ाई की है, बाद में इंग्लैंड की वैशविक यूनिवर्सिटी से अंतर्राष्ट्रीय संबधों में मास्टर्स किया और अब आप ज्यादातर समय कश्मीर में ही रहती हैं, तो सुनकर बहुत खुशी हुई। पर साथ यह सुनकर दु:ख भी हुआ कि आप अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को खत्म किये जाने से काफी नाराज हैं और आपको यह डर है इसके हटने से धार्मिक समीकरण बदल जायेंगे और कश्मीरी संस्कृति तबाह हो जाएगी।

सना हमारा मानना है कि चार किताब पढ़ लेने से या किसी यूनिवर्सिटी से डिग्री के ले लेने से संस्कृतियों का ज्ञान नहीं होता। किसी संस्कृति का ज्ञान तब होता है जब हम उसके धर्म ग्रन्थ पढ़े उसका अतीत जाने। अब जिस संस्कृति के खत्म होने का आप लोग रोना रो रहे हैं वह तो अस्सी-नब्बे के दशक में ही खत्म हो गयी थी। उस संस्कृति की लाश का क्या बचाना?

फिर भी सना कभी समय मिले हिन्दू संस्कृति के इतिहास को जरुर पढ़ना क्योंकि जब आपकी संस्कृति ने ईरान में पारसी संस्कृति को लगभग समाप्त कर दिया था तब इसी हिन्दू संस्कृति ने उनमें से बचे कुछ लोगों को पनाह दी और उनकी संस्कृति की रक्षा की थी। इसके अलावा जब विश्व भर में नाजी यहूदियों को कत्ल कर रहे थे तब हमने उनकी संस्कृति को ढाल बनकर बचाया था। सना तुम्हें क्या इतिहास बताना, हिन्दू संस्कृति तो दूसरों पर परोपकार और उनकी रक्षा में ही आधी से ज्यादा खुद मिट गयी। यदि समस्त संस्कृतियों का कोई पालना है तो सिर्फ यही हिन्दू संस्कृति तो है इसके अलावा कोई दूसरी हो तो बताना।

सना हमारा नहीं तो कम से कम अपनी इतिहास ही पढ़ लेना कि तुम्हारी इसी इस्लामिक संस्कृति से मोहमम्द साहब के अंतिम वंशजों रक्षा करते-करते राजा दाहिर ने अपने प्राण गंवा दिए और उनकी मासूम बेटियों के साथ मोहमम्द बिन कासिम ने क्या किया इतिहास आज भी रोता है। इसके अलावा भी न जाने कितने किस्से हैं अगर उन्हें जानोगी तो खुद की संस्कृति से चिढ़ हो जाएगी।

सना मुफ्ती जी, शायद आपने अपने कोर्स की कुछ किताबें पढ़ीं, अपने नाना मुफ्ती मोहम्मद सईद और अपनी माँ महबूबा मुफ्ती जी के कुछ भाषण सुने और इसे ही संस्कृति समझ लिया। यदि तुम्हें संस्कृति को जानना हो तो एक बार भारत भ्रमण करो, कश्मीरी संस्कृति का पता चलेगा कि लोग उससे कितना प्यार करते हैं। पता है सना, शेष भारत से जब कोई कश्मीर जाता है, चाहे पुरुष हो या महिलाएं, वह कश्मीरी ड्रेस पहनकर एक फोटो जरुर लेकर आते हैं। उसे अपने ड्राइंग रूम में सजाते है और फिर अपने यारे-प्यारे को गर्व से बताते है कि यह फोटो तब की है जब हम कश्मीर गये थे।

.....सना, आज तुम्हारी अम्मी कह रही है कि अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू-कश्मीर को मिले विशेष राज्य के दर्जे को हटाने के फैसले से कश्मीर के नौजवान बहुत नाराज हैं और ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। सना, कम से कम अब आप ही उन्हें समझाएं कि यह कोई ठगी नहीं है, असली ठगी तो वह थी जो तीन लाख लोग रातों-रात घर छोड़ने को मजबूर किये गये थे।.....

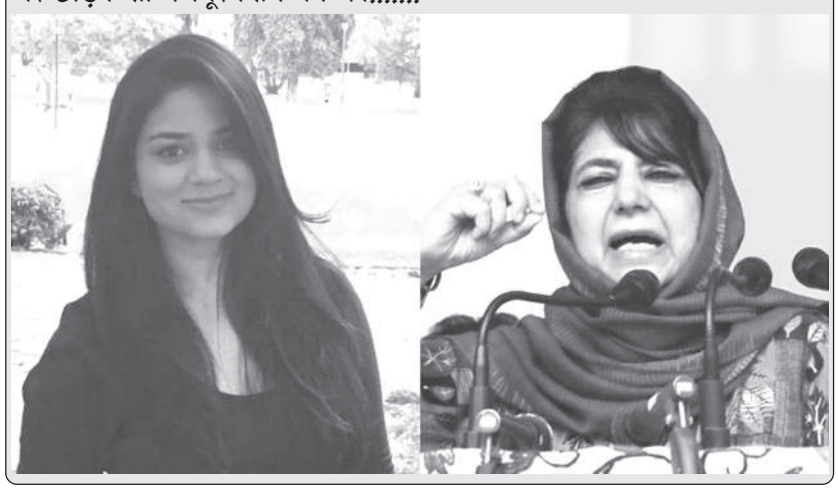

साथ ही फोटो पर ऊँगली से बताते है कि ये देखो कश्मीरी परिधान।

सना, इससे पता नहीं आपकी संस्कृति और सभ्यता को क्या खतरा हो जाता है पर दुनिया की अनेकों संस्कृतियां इस उम्मीद में जिन्दगी जी रही है कि उनकी संस्कृति का भी कभी ऐसे ही प्रचार हो। सना नब्बे के दशक से पहले कोई भारतीय फिल्म ऐसी होगी जिसका कोई गीत कश्मीर घाटी में न फिल्माया गया हो। उस समय हम छोटे थे, सप्ताह में बुधवार और शुक्रवार को जब दूरदर्शन पर चित्रहार या रविवार को रंगोली में इन गानों में बर्फ से ढकी चोटियाँ, ऊँचे लहराते चिनार के पेड़ और खूबसूरत वादियाँ दिखाई जातीं तब अहसास होता था कि वाकई कश्मीर धरती का स्वर्ग है।

पर सना! 90 के दशक में धरती की जन्नत में अचानक एक मजहबी आग लग गयी और देखते-देखते चिनार के पेड़ जल उठे। सफेद बर्फ से ढकी चोटियाँ रक्त के छींटों से लाल हो चली। आज टीवी पर घाटी देखते है तो पत्थरबाजों और आंतकी संगठनो के पोस्टर के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता है। सना क्या आप बता सकती है कि आपकी माँ समेत घाटी के अनेकों नेता इसी रक्तरंजित संस्कृति को बचाना चाहते है या वह नब्बे से पहली घुली मिली सूफी संस्कृति जिसे असली कश्मीरियत कहा जाता था?

सना, आज तुम्हारी अम्मी कह रही है कि अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू-कश्मीर को मिले विशेष राज्य के दर्जे को हटाने के फैसले से कश्मीर के नौजवान बहुत नाराज हैं और ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। सना, कम से कम अब आप ही उन्हें समझाएं कि यह कोई ठगी नहीं है, असली ठगी तो वह थी जो तीन लाख लोग रातों-रात घर छोड़ने को मजबूर किये गये थे।

सना, शायद आप तब छोटी रही होगी जब इसी कश्मीरियत का राग अलापने वाले चुप हो गये थे। उनके देखते खूबसूरत वादियों में नफरत के पर्चे बांटे जाने लगे, कश्मीरी हिन्दुओं को यहां तक कहा गया कि अपनी माँ-बहन और बेटी को छोड़कर घाटी से चले जाओ। कब सर्वधर्म की प्रेम स्थली हिजबुल और लश्कर जैसे मानवता के दुश्मन आतंकी संगठनों का ठिकाना बन गयी, जहाँ हिन्दू, जैन, सिख बौद्ध और मुसलमान मिलकर रहते थे। उस समय उनके साथ क्या-क्या हुआ आज की तरह वीडियो तो नहीं है। लेकिन जब विस्थापित कश्मीरी हिन्दू सिख और बौद्ध उस समय की कहानी बताते हैं तो आँखे जरुर नम हो जाती हैं।

सना आप बार-बार कश्मीर को स्वर्ग कहती हो तो यह भी जानती होंगी कि स्वर्ग खुदा के घर को कहा जाता है। क्या सना खुदा के घर में इतना भेदभाव है कि वहां सिर्फ एक मजहब के लोग ही रह सकते हैं और सना क्या जन्नत में आतंकियों संगठन के लिए दरवाजे खुले हैं? सना आप यह भी बताना कि क्या खुदा के घर में जरा सी भी धर्मनिरपेक्षता नहीं है जो बार-बार डेमोग्रेफी बदल जाने का डर लोगों को दिखाया जा रहा है और क्या कश्मीरियत का मतलब सिर्फ कश्मीरी मुसलमान है सना? - ***राजीव चौधरी***

प्रेरक प्रसंग

पहले यज्ञ-हवन करुंगा

सन् 1948 ई. में हमने आर्यसमाज दीवानहाल में महात्मा सुमेरसिंहजी काली कम्बलीवालों (क्रान्तिवीर संसद् सदस्य स्वर्गीय यशपालसिंह के पिताजी) के जीवन की एक घटना श्री महाशय कृष्णजी से सुनी। महाशयजी ने अपने व्याख्यान में यह सुनाया कि महात्माजी कहीं जा रहे थे। किसी रेलवे स्टेशन पर अंग्रेज सरकार के गुप्तचरों की रिपोर्ट पर उन्हें पकड़ लिया गया। रेलवे के लोग नहीं जानते थे कि जिसे बन्दी बनाया गया है, वे एक प्रतिष्ठित महात्मा थे।

उन्हें भोजन दिया गया तो उन्होंने यह कहकर भोजन करने से इन्कार कर दिया कि जब तक यज्ञ-हवन नहीं कर लेता तब तक भोजन नहीं करूँगा। बहुत आग्रह किया गया, परन्तु वे न माने। रेलवे का स्टाफ अपने स्टेशन पर उस बन्दी के शान्तभाव व दृढ़ प्रतिज्ञा को देखकर बड़े प्रभावित हुए। यद्यपि अंग्रेज सरकार से लोग डरते भी थे, परन्तु ऐसे बन्दियों से जनता की सहानुभूति भी होती थी। महात्मा सुमेरसिंहजी का सत्याग्रह सफल रहा और स्टेशनमास्टर ने पुलिस को कहा कि इस बन्दी के लिए हवन-यज्ञ का जो-जो सामान चाहिए, वह लाकर देगा। विद्यार्थी जीवन से सुनी इस घटना का इतना अंश हमारे हृदय पर तभी अंकित हो गया। अधिक विस्तार का पता नहीं। हमने एक बार ठाकुर यशपालसिंहजी को भी यह घटना सुनाई। उन्होंने भी इसकी पुष्टि की और कहा कि महात्माजी अपने नियम-पालन में बड़े पक्के थे।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

तनाव के कारण और निवारण

..... सब कुछ मनुष्य के मनचाहा कभी नहीं होता। अनेक बार अनचाहा और विपरीत वातावरण में मनुष्य को एडजेस्ट करना आना ही चाहिए। प्रायः जब हम ऐसी चीज़ों के प्रति डर जाते हैं जिनपर हमारा नियंत्रण नहीं होता या हम उन परिस्थितियों को बदलने में असमर्थ होते हैं, तो प्रायः भावनात्मक तनाव उत्पन्न होता है। फिर कुछ लोग भाग-दौड़, तनावग्रस्त जीवन पद्धति के आदि हो जाते हैं, जो दबाव में जीने की वजह से पैदा होता है। .....

गतांक से आगे -

तनाव के बुरे प्रभाव बचने के लिए-

1) आप स्वयं अपना निरीक्षण करें, आपके सोचने-विचारने का ढंग कैसा है? इस पर गहराई से सोचें।

2) दूसरों की उन्नति-प्रगति और सफलता को देखकर आपको जलन तो नहीं होती? अगर होती है तो इस दुर्गुण को दूर करें।

3) किसी की सफलता को देखकर मन में ईर्ष्या का भाव न उभरने दें बल्कि उसकी प्रशंसा करें, उसको शाबाशी देकर देखें आपके भीतर एक नया बदलाव आप महसूस करेंगे, आपके मन को मजबूती मिलेगी।

4) दूसरों में कमियां खोजना बंद करें, आपके अंदर अच्छाइयां आना शुरू हो जाएंगी, दुनिया में महत्वपूर्ण होना अच्छी बात है लेकिन अच्छा होना उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है।

5) छोटी-छोटी बातों को दिल से लगाना बंद करें आपके अंदर बड़ी बड़ी समस्याओं से लड़ने की ताकत आ जएगी, फिर आपकी समस्याएं छोटी हो जाएंगी और आप स्वयं बड़े हो जाएंगे।

6) इसलिए कहा भी जाता है कि-मन के हारे हार है और मन के जीते जीत। मन चंगा तो कठौति में गंगा, इसलिए हर स्थिति और परिस्थिति में अपने मन को मजबूत बनाएं।

तनाव से बचने के लिए
मनोबल को ऊंचा रखें

सांसारिक उठापटक के कारण, संसार के द्वन्द्वों के कारण, प्रत्येक मनुष्य के जीवन में समय-समय पर ऐसे दबाव और प्रभाव बनते हैं, जिनके कारण उसका मनोबल प्रभावित होता है और धीरे-धीरे अंदर से इन्सान कमजोर होने लगता है। बाहर की स्थितियां-परिस्थितियां मनुष्य को आंतरिक रूप से प्रभावित करती हैं और आंतरिक वातावरण तथा स्थितियां मनुष्य के आचरण को और व्यवहार को प्रभावित करती हैं। मनुष्य जहां-जहां से बंधा होता है, वहीं-वहीं से कमजोर पड़ता है। काम, क्रोध, लोभ-मोह, राग-द्वेष से प्रभावित होकर किए गए अशुभ कर्मों के फल मनुष्य के सामने आते ही हैं। कर्म शुभ होगा, तो फल सुखकारी होगा, अगर कर्म अशुभ है, तो फल दुःख देने वाला होगा। इसलिए मनुष्य के जीवन में कभी सुख, कभी दुःख, कभी हर्ष, कभी उदासी, कभी हंसी, कभी रोने जैसी स्थितियां आती-जाती रहती हैं।

लेकिन एक जैसी स्थितियां हमेशा कभी किसी की नहीं रहती, अपने मन में उम्मीद का, आशा-उत्साह का रोज नया दीपक जलाकर रखिए, शुभ सोचिए, सकारात्मक चिंतन कीजिए, निष्काम भाव से कर्त्तव्य कीजिए, समय बदलेगा, अच्छा होना शुरू हो जाएगा। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि अपनी हिम्मत को, साहस को, अपने मनोबल को टूटने मत देना, शरीर की हानि, पैसे की हानि, रिश्ते-नातों की हानि सब कुछ ठीक हो सकती है, लेकिन मनोबल की हानि, मनोबल का कमजोर होना बड़ा खतरनाक होता है, यह आदमी को हर तरह से कमजोर कर देता है। इसलिए मनोबल को मजबूत बनाए रखिए।

मन एक सरोवर है जिसमें हर्ष और शोक की लहरें हमेशा चलती रहती हैं। इसलिए दुःख आने पर ज्यादा निराश नहीं होना। परिस्थितियों का अंधेरा है, तो मनोबल का दीपक जलाइए। अंधकार स्वतः मिट जाएगा। भगवान में अपने विश्वास को बनाए रखिए। उसके नाम में बड़ी शक्ति है, अपना कर्म पूरी निष्ठा के साथ करिए। उसका नाम जपिए, मन में श्रद्धा रखिए, आपकी शक्ति बनी रहेगी।

जीवन में उदासियां आएं तो भी मुस्कराहट के फूल खिलाते रहिए, ज्यादा उदास हों, तो ज्यादा मुस्कराइए, तब मुस्कराहट की ज्यादा जरूरत होती है। धैर्य को टूटने न दें, साहस को बनाएं रखें। संतुलन बनाए रखें, खुद को खुद ही समझाने वाले बनिए, अपने आंसुओं को स्वयं ही पोंछने वाले बनिए, कोई दूसरा आपको आपसे ज्यादा समझने-समझाने वाला नहीं हो सकता। दुनिया में भीड़ बहुत है, पर सच में हर इन्सान को अकेले ही जीना पड़ता है। अपने कर्मों का दुःख-सुख हर इन्सान खुद ही भोगता है। सुख में सब साथी लगेंगे, पर दुःख में सब साथ छोड़ देंगे। दुःख-सुख दोनों समय में जो साथ देगा वह केवल ईश्वर है, ईश्वरीय वाणी वेद का ज्ञान ही साथ देगा, ईश्वर की कृपा साथ देगी, ईश्वर का दिशा-निर्देश साथ देगा।

वेद के अमृत वचन सुनिए, पढ़िए, रास्ता खुलेगा, अंधेरा छटेगा, सवेरा होगा।

विपरीत परिस्थितियों में जब आप मन से कमजोर पड़ जाते हैं तब आपको और ज्यादा कमजोर करने वाली ताकतें घेर लेती हैं। अच्छा सेनापति वही होता है जो अपनी फौज को कभी कमजोर नहीं होने देता, उसका मनोबल, उसकी हिम्मत नहीं टूटने देता, आप भी अपने घर परिवार-समाज के सेनापति हैं, घर में दुःख या मुसबीत आए, तो घरवालों का मनोबल न टूटने दें। दुनिया के सामने अपनी मुसीबतों का रोना कभी मत रोएं, दुनिया केवल हंसेगी, याद रखें दुनिया में जो भी आया है, ऐसा कोई नहीं है, जो कभी रोया न हो, चाहे वह राम थे या कृष्ण थे, जिसने भी संसार में जन्म लिया, उसे रोना अवश्य पड़ा, इनसान का जन्म ही रोने से प्रारंभ होता है। पहला श्वास अंदर आते ही बाहर रोने की आवाज आना शुरू हो जाती है। किंतु जन्म के समय का रोना तो जीवन का प्रतीक है, उस समय बच्चे के रोने की आवाज को सुनकर तो सब खुश होते हैं, लेकिन जीवन के सफर में मुसीबतों के बीच हंसना-मुस्कराना ही जीवन की शोभा है। मन को मजबूत रखें, हिम्मत-हौंसले के साथ कर्म करते रहें।

- आचार्य अनिल शास्त्री

"सहयोग" द्वारा वस्त्रों के वितरण से जरूरतमंद लोगों के जीवन में आई खुशियों की बहार

वस्त्र वितरण से पूर्व किया यज्ञ का आयोजन

जीवन में लगातार खुशियां भरने का कार्य कर रही है। जो पिछड़ेपन का शिकार हैं, वक्त और हालात की मार से गरीबी और तंगहाली के कारण बेबसी का जीवन जीने को मजबूर हैं। जिनके बच्चों के पास पहनने के लिए अच्छे वस्त्र और जूते, चप्पल तक नहीं हैं। ऐसे लोगों के बीच जाकर सहयोग उन्हें उनकी आवश्यकता के अनुरूप मूलभूत जरूरतों का सामान प्रदान करता है।

आजकल पर्व, त्यौहारों का समय चल रहा है। सभी के मन में अपने बच्चों के लिए अच्छे कपड़े, खिलौने, जूते, चप्पल आदि खरीदने की इच्छा होती है। लेकिन जिनके पास में धन का अभाव है वे अपने बच्चों के सपने कैसे पूरे करें? इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए सहयोग की टीम 4 अगस्त 2019 को रानीबाग के शकूर बस्ती की जे-जे कालोनी के मंदिर परिसर में वस्त्र वितरण के लिए पहुंचे। वहां पर टीम ने पहले यज्ञ किया और यज्ञ के उपरांत लगभग 20 बच्चों और महिलाओं को फैमिली किट जिसमें बच्चों, महिलाओं और पुरूषों के वस्त्र प्रदान किए। ज्ञात हो कि मंदिर परिसर में पहले तो वहां के लोगों ने यज्ञ करने के लिए मना किया किंतु जब सहयोग की टीम ने अपना उद्देश्य बताया तो वे लोग जो विरोध कर रहे थे वे भी यज्ञ में शामिल हुए और उन्होंने भी वस्त्र वितरण में सहयोग दिया।

आप भी अपनी आर्यसमाज/संस्था में 'सहयोग' केन्द्र बनाकर वस्त्र, पुस्तकें, कापियां, खिलौने आदि एकत्र करें, जिससे जरुरतमन्द परिवारों का सहयोग सम्भव हो सके।

सहयोग सेवा के इस क्रम में 9 अगस्त 2019 को सहयोग की टीम आर्य समाज सागरपुर नई दिल्ली के परिसर में पहुंची जहां पर विधिवत् यज्ञ के उपरांत बच्चों को वस्त्र वितरित किए गए। इस अदभुत सेवा कार्य में आर्य समाज सागरपुर के अधिकारी, कार्यकर्ता भी विशेष रूप से सहयोगी रहें और सहयोग की टीम ने सागरपुर के अधिकारियों द्वारा ही बच्चों को वस्त्र प्रदान करवाएं। इस तरह दिल्ली सभा लगातार सहयोग के माध्यम से एक अदभुत और अविस्मरणीय सेवा कार्य किया जा रहा है। **आओ, हम भी करें सहयोग, शुभ कर्मों का योग।** अगर आप भी सहयोग योजना में वस्त्रों, पुस्तकों, खिलौने आदि का योगदान करना चाहते हैं अथवा अपने क्षेत्र के गरीब परिवारों में सामग्री वितरित करना चाहते है तो **9540050322** पर संपर्क करें।

ओ३म्

सनातन वैदिक धर्म
आर्य समाज
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्मृति-
150 वाँ वर्ष - 2019
वैदिक धर्म महासम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
एवं
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ
के संयुक्त तत्त्वावधान में

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

दिनांक : 11-12-13 अक्टूबर 2019 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

आश्विन शु० 13-14-15 विक्रमी सं० 2076

कार्यक्रम स्थल - चौधरी लॉन्स, सुन्दर पुर मार्ग
निकट बी.एच.यू. मुख्य द्वार, नरिया,लंका, वाराणसी

- समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि वैदिक धर्म महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट कर लें।
- इन तिथियों में कोई भी अपना कार्यक्रम आयोजित न करे।
- सभी आर्यजन अपना रेलवे रिजर्वेशन तत्काल करा लेवें।
- सभी आर्यजन महासम्मेलन की तैयारियों में जुट जाएं।
- आर्यसमाज अपने कार्यक्रम के पत्रकों में आर्य महासम्मेलन की जानकारी अवश्य प्रकाशित करें।
- सम्मेलन में पधारने वाले समस्त आर्यजन पंजीकरण हेतु अपना नाम, पता, फोन नं., ईमेल आदि लिखकर aryasabha@yahoo.com, अथवा 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें।
- ग्रुप में पधारने वाले आर्यजन ग्रुप लीडर के विवरण के साथ सूची बनाकर भेजें।
- आर्यजनों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाएगी।

महासम्मेलन की सफलता के लिए अपना सहयोग **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम क्रॉस चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से '15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते पर भेजें।

यदि आप अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं तो कृपया 96501833339 से संपर्क करें

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा | आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश | दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
सार्वदेशिक आर्य वीर दल | जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी | महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ समृति न्यास वाराणसी

संपर्क सूत्र - प्रमोद आर्य (8052852321) दिनेश आर्य (9335479095) राजकुमार वर्मा (9889136019)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा परिसर - आर्यसमाज हनुमान रोड में 73वें स्वाधीनता दिवस का भव्य आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य समाज 15-हनुमान रोड, के प्रांगण में 14 अगस्त 2019 को 73वां स्वाधीनता दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने कर-कमलों से तिरंगा ध्वज फहराया, जिसमें उपप्रधान श्री शिव कुमार मदान जी, श्री ओम प्रकाश आर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, मन्त्री श्री सुरेंद्र आर्य जी, श्री सुखवीर सिंह आर्य जी, श्रीमती वीना आर्या जी, श्री एस.पी. सिंह जी आदि अधिकारी एवं गणमान्य महानुभाव सम्मिलित रहे। कार्यक्रम में सभा के सभी कार्यकत्ताओं की उपस्थिति रही। ध्वजारोहण के उपरांत राष्ट्रगान गाया गया और भारत माता की जय, वैदिक धर्म की जय, वंदेमातरम् आदि देशभक्ति के नारों से संपूर्ण वातावरण राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत-प्रोत हो गया। सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में गागर में सागर भरने की कहावत को चरित्रार्थ करते हुए अपने संदेश में कहा कि देश का नाम रोशन करने के लिए प्रत्येक भारतवासी को शुभकर्म करने चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति शुभकर्म करे, अपनी भारत माता से प्रेम करे, तभी देश का मस्तक ऊंचा होगा। आर्य जी ने भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का उदाहरण देते हुए कहा कि मोदी जी के द्वारा किए गए अद्भुत कार्यों से ही आज देश का नाम रोशन हो रहा है और देश का ध्वज शान से लहरा रहा है। कर्म इंसान की सबसे बड़ी शक्ति है। कर्म से ही मनुष्य यशस्वी होता है। इसलिए आओ, हम संकल्प करें कि राष्ट्रहित को ध्यान में रखकर ही कर्म करेंगे। प्रधान जी के इस संदेश को सभी उपस्थित महानुभावों ने करतल ध्वनि से सराहना की और प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

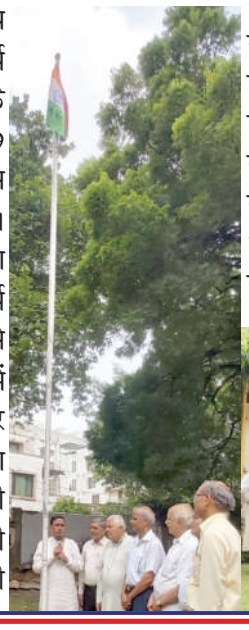

Swami Dayanand, Aryasamaj and his contribution in Dalit upliftment

- Dr. Vivek Arya

Continue from last issue

Four middle schools and over thirty five upper and lower primary schools, a few girl schools and a few night schools for adults were running to impart education to the namasudra and other communities in districts of Dacca, Mymensingh, Noakhali, Chittagong, Jessore and Barisal.

In Punjab region hundreds of schools were established under D.A.V. school chain which imparted education to thousands of pupils from each fraction of society.

In Jalandhar pundit Somdat started Dalit upliftment work. He was socially boycotted from Brahmin community and denied use of water from well. He started using impure water from river. His mother fell ill. Doctors advised use of clean water from well. He was in confusion what to do. One is way to say sorry to his community members and stop all Dalit upliftment work. But his own consciousness does not permit to stop this mission. But life of own mother is also important. His mother understood whole situation and asked him to carry his mission saying that one day she have to die why he stops his mission because of her. She sacrificed her life but Dalit upliftment work was not stopped. How great mother she was.

Nayak community in united provinces engaged their daughters in prostitution. Aryasamaj distributed pamphlets to stop this evil. Aryasamaj married those girls in respectable families and send other girls to schools. It offered scholarships to boys to educate them. Nayak girl's protection act was passed by efforts of Thakur Mashal Singh and just whole community was uplifted with efforts of Aryasamaj.

Reforms were done in so called criminal tribes in united provinces. More than fifty thousand criminal tribe members were rehabilitated outside luck now in colony name Arya nagar settlements. They were educated and a dispensary was also opened.

The reformation drive by Aryasamaj also influenced others. In kumbh fair of 1927 Pundit Madan Mohan Malviya in All India Sanatan Dharma Sabha passed proposal of permission of all untouchables to go to temples and also to draw water from public wells.

On 17th April 1927 an All India achhutoddhar conference was organized under the president ship of Lala Lajpat Rai wherein he appealed to the people to allow the untouchable to draw water from public wells.

On 17th July 1932 the untouchability removal day was celebrated at Bombay by Aryasamaj. The untouchables drew water from the wells and the Brahmins, Kshatriyas and Vaishyas drank it willingly.

On 19th sept 1933 at a grand meeting organized at Bombay Aryasamaj appealed to the people to treat untouchables as their equal and to assure them that they were parts of Hindu community only.

Swami Sharddhananda and congress

Since his joining politics Swami Sharddhananda was continuously motivating Indian national congress to deal with the problem of untouchability at national level with extensive measures. In his chairman address of Amritsar congress (1919) he strongly expressed his feelings as "Is it not true that so many among you who make the loudest noises about the acquisition of political rights, are not able to overcome their feeling of revulsion for those sixty millions of India who are suffering injustice, your brothers whom you regard as untouchable ? How many are there who take these wretched brothers of theirs to their heart?…give deep thought…and consider how your sixty million brothers-broken fragments of your own hearts which you have cut off and thrown away- how these millions of children of mother India can well become the anchor of the ship of a foreign government. I make this one appeal to all of you, brothers and sisters. Purify your hearts with the water of the love of the motherland in this national temple, and promise that these millions will not remain for you untouchables, but become brothers and sisters. Their sons and daughters will study in our schools, their men and women will participate in our societies, in our fight for independence they will stand shoulder-to-shoulder with us, and all of us will join hands to realize the fulfilment of our national goal" (Quotations from original Hindi texts of the swami's Amritsar conference address obtained from Gandhi memorial museum, Delhi)

- To be continue ......

राष्ट्र कल्याण यज्ञ एवं भजन संध्या सम्पन्न

आर्यसमाज पश्चिम विहार के प्रांगण में राष्ट्र कल्याण यज्ञ, भजन संध्या, योग सम्मेलन, आध्यात्म पथ पत्रिका का विमोचन, एवं वैदिक विद्वानों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के महान्त्री श्री सतीश चड्डा जी का विशेष सम्मान किया गया। सम्मान प्रदान करते सर्वश्री अरुण आर्य, आचार्य चन्द्रशेखर, श्री यशपाल आर्य जी एवं श्री सुरिन्द्र चौधरी जी।

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अतः दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये। मात्र

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

23वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 23वें परिचय सम्मेलन का आयोजन 1 सितम्बर, 2019 को आर्यसमाज आदर्श नगर, नई दिल्ली में प्रातः 10 बजे से किया जाएगा।

सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्डा जी के अनुसार सभी आय वर्ग एवं शैक्षिक योग्यता स्तर के युवक-युवतियों का यह परिचय सम्मेलन भव्य रूप से आयोजित किया जा रहा है। महर्षि देव दयानंद की शिक्षाओं को सर्वोपरि मानते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा समय-समय पर ऐसे परिचय सम्मेलनों का आयोजन लंबे समय से करती आ रही है। महर्षि दयानंद जी के अनुसार अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार आर्य युवक-युवतियां विवाह करें। इस परंपरा, सिद्धांत और मान्यता को आगे बढ़ाते हुए आर्य परिवारों की युवा पीढ़ी की सेवा में यह अदभुत प्रेरणाप्रद कार्य है। इससे पूर्व 22 आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है। जिनमें दिल्ली, इंद्रौर, आणंद, रोजड़, गुजरात, जम्मू-कशमीर आदि स्थानों में आयोजित सम्मेलनों में आर्य परिवारों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन को सफल बनाया। समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फॉर्म इसी पृष्ठ पर पृथक से प्रकाशित किया गया है। इस पंजीकरण फार्म को **www. thearya samaj.org** से डाउनलोड भी किया जा सकता है। और फोटोप्रति भी मान्य है। **www. matrimony.thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन पंजीकरण भी कर सकते हैं।

- अर्जुनदेव चड्ढा
राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)

पंजीकरण संख्या : ॥ ओ३म्॥ रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

23 वाँ आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टेलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959
Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रुप से लगाएं।"

1. युवक/युवती का नाम :.................... गोत्र....................
2. जन्मतिथिः.................... स्थान : ....
3. रंग.................... वजन .... लम्बाई ....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : ....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता/.................... व्यक्तिगत मासिक आय....................

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम .... व्यवसायः .... मासिक आय....................
7. पूरा पताः....................
   दूरभाष :.................... मोबा.:.................... ईमेल :....................
8. मकान निजी/किराये का है....................
9. माता का नाम :.................... शिक्षा :.................... व्यवसाय : ....
10. भाई - अविवाहित....................विवाहित.................... । बहिन- अविवाहित....................विवाहित.................... ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? (आवश्यक)....................
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) ....
13. युवक/युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) लगाएं : ☐ विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग :
14. **विशेषः**

मैं....................घोषणा करता हूँ कि इस फार्म में मेरे द्वारा दी गई समस्त जानकरी एवं तथ्य पूर्णतया सत्य है।

दिनांक : ....

हस्ताक्षर अभिभावक/ प्रत्याशी

कार्यक्रम स्थल :- आर्य समाज, गली नं. 11, सुशीला रोड़ आदर्श नगर, दिल्ली - 110033

दिनांक : 1 सितम्बर 2019, रविवार **समय :- प्रातः 10.00 बजे से**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

श्री अर्जुनदेव चड्डा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428

आर्य समाज, गली नं. 11, सुशीला रोड़, आदर्श नगर, दिल्ली-110033

श्री रविन्द्र बत्रा, प्रधान, मो. 07011496219, श्री प्रविण बत्रा, मंत्री, मो. 09868993911, श्री देवेन्द्र जावा, कोषाध्यक्ष, मो. 09212114202

नोट : 1. ई-मेल एड्रेस, मोबाईल व फोन नम्बर लिखना आवश्यक है
2. विकलांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी पूर्ण सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
   यह फार्म ऑनलाइन भी भर सकते हैं लिंक - matrimony.thearyasamaj.org
5. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 300/-(तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा IFSC-UTIB 0000223 में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 10 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। कॉलम नं. 11 भरना आवश्यक है।
7. रजिस्ट्रेशन शुल्क 300/- प्राप्त किये जाने पर ही रजिस्ट्रेशन फार्म स्वीकार किया जायेगा।

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

पृष्ठ 5 का शेष

धरती पर वेद, महर्षि दयानंद और आर्य समाज की शिक्षाओं का निरंतर विकास और विस्तार हो रहा है।

परिचय सत्र:- आर्य महासम्मेलन का शुभारंभ एक परिचय सत्र के रूप में हुआ। जिसमें आर्य पथिक श्री गिरीश खोसला वानप्रस्थ जी द्वारा पूरे विधि-विधान से सभी महानुभावों का परिचय कराया गया। इसके उपरांत आर्य महिला मंडल शिकागो द्वारा सभी आर्यजनों का मधुर एवं सारगर्भित गीत द्वारा अभिनंदन किया गया। ज्ञात हो कि इस अवसर पर डॉ. सुखदेव सोनी जी को उनके 85वें जन्मदिन की देश-विदेश से पधारे हुए आर्यजनों ने अपनी-अपनी शुभकामनाएं दीं और उनकी विशिष्ट जीवनशैली पर आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा एक सुंदर पुस्तक का विमोचिन भी किया गया।

विशेष उद्बोधन:- सम्मेलन के कई सत्रों में आर्य संन्यासियों एवं आर्य नेताओं ने प्रेरणाप्रद उद्बोधन देकर आर्य समाज के विकास और विस्तार के लिए अपने विचार प्रस्तुत किए। इस क्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री विश्रुत आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज एक विश्व व्यापी संगठन है। इसको वैश्विक दृष्टि से सफल बनाने के लिए हर आर्य को अपना संभव योगदान देना चाहिए। हर व्यक्ति अपने मन में आर्य समाज की सेवा को जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य मानकर आगे बढ़े, जिससे आर्य समाज नित-निरंतर उन्नति, प्रगति और सफलता प्राप्त करे। अमेरिका सभा के महामंत्री श्री भुवनेश खोसला जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा संचालित विभिन्न सेवा-प्रकल्पों की एक रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए VBAT कार्यक्रमों पर विस्तृत प्रकाश डाला जिसमें स्कॉलर शिप कार्यक्रम, अंग्रेजी भाषा में वैदिक सिद्धांत, मान्यताओं और परंपराओं का वैचारिक प्रकाशन, हवन मोबाईल एप्लीकेशन आदि के विषय में जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि आर्य समाज के सेवाकार्य लगातार बढ़ते रहेंगे और आर्य समाज तीव्र गति से पूरे अमेरिका में विस्तार करता रहेगा। इस क्रम में श्री देव महाजन जी ने वैदिक संस्कृति स्कूलों की स्थापना करने पर बल देते हुए कहा कि हर शहर में वैदिक संस्कृति स्कूल खोला जाए। जो हमारे मानव समाज को सुदिशा प्रदान कर सके। स्कूलों के माध्यम से बचपन में ही जब वैदिक संस्कार बच्चों के मन में भर जाएंगे तो फिर वे बड़े होकर आर्यसमाज के कार्यकर्ता बनकर दुनिया में धूम मचाएंगे।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य नेता एवं सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री विनय आर्य जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में संपूर्ण विश्व में आर्य समाज द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न सेवा प्रकल्पों की जानकारी देते हुए बताया कि जो व्यक्ति जहां पर भी हैं वहीं से आर्य समाज का अपनी क्षमता के अनुसार प्रचार-प्रसार कर रहा है। यह अपने आप में एक आदर्श है। अमेरिका के आर्यजन लगातार 14 वर्षों से आर्य महा सम्मेलन आयोजित कर रहे हैं, यह अपने आप में एक कीर्तिमान है। पश्चिमी देशों के आर्यसमाजों का एक राष्ट्रीय केंद्र अवश्य बनाया जाए और वह केंद्र अमेरिका में ही बने। इस केंद्र से सभी पश्चिमी देशों में आर्य समाज के कार्य सुचारू रूप से निरंतर चलते रहें।

आर्य युवा शक्ति के विभिन्न कार्यक्रम:- आर्य महासम्मेलन में युवाओं के कार्यक्रम युवाओं द्वारा ही सुनिश्चित किए गए थे। जिनमें केवल प्रवचन ही नहीं बल्कि सवांद के कार्यक्रम विशेष थे। युवाओं में आर्यसमाज और वैदिक ध र्म के प्रति रूचि पैदा करना, परस्पर टीम भावना का उदय करना, युवाओं की सांस्कृतिक प्रस्तुतियां जो कि आध्यात्मिक विषयों पर कार्यशालाओं के रूप में आयोजित की गईं, अपने आपमें एक विशेष आर्कषण का प्रमाण बन गई। इस क्रम में वेद मंत्रों का सस्वर पाठ, संस्कृत के गीतों का गायन, श्लोकों का उच्चारण, राष्ट्र भक्ति के नाटकों का मंचन और सुंदर भाषण बच्चों की योग्यता का प्रभाव ऐसा पड़ा कि जिसने भी सुना वह आश्चर्य में पड़ गया। युवाओं को एक पूरा सत्र विशेष रूप से दिया गया था जिसमें लगभग 2 घंटे तक मंच की पूरी कार्यवाही बच्चों ने ही चलाई। यह अपने आपमें अमेरिका सभा का एक बड़ा उदाहरण है।

उपलब्धियां एवं अविस्मरणीय पल:- आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा 14 वर्षों से आर्य महासम्मेलन का आयोजन करना अपने आपमें एक विशेष उपलब्धि है। लेकिन इस सम्मेलन में आर्य समाज के राष्ट्रीय केंद्र की स्थापना हेतु श्री विनय आर्य जी ने जो प्रस्ताव रखा था उसका इतना बड़ा प्रभाव हुआ कि अटलांटा के एक आर्य परिवार ने तुरंत इस केंद्र की स्थापना हेतु 30 एकड़ भूमि दान करने की घोषणा की और जो कार्य बड़ा दुर्लभ प्रतीत हो रहा था उसकी संपूर्णता के लक्षण दिखाई देने लगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका का विश्वास है कि शीघ्र ही हमारा यह सकंल्प पूर्ण होगा।

सम्मान कार्यक्रम:- सम्मेलन के इस विशेष अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा जहां 4 युवाओं को छात्रवृत्ति प्रदान की गई,वहीं आर्य समाज के विस्तार के लिए यह योजना निरंतर गतिशील रहती है। सभा द्वारा युवाओं को छात्रवृत्ति योजना में एक निश्चित मानदंड द्वारा चुना जाता है और विजेताओं को ही छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। इस अवसर पर आर्य समाज की उन महान विभूतियों को जो नि:स्वार्थ भाव से लगातार आर्य समाज का प्रचार-प्रसार और अपनी सेवा-साधना द्वारा गौरव बढ़ा रहे हैं उन्हें सम्मानित किया गया। सम्मान के इस विशेष क्रम में-

1. पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी - आर्य समाज के लिए अनन्य योगदान हेतु
2. आर्य समाज सबअर्बन न्यूयॉर्क - युवाओं में विशेष कार्य करने हेतु
3. डॉ. विवेक आर्य - सोशल मीडिया में किये जा रहे आर्य समाज के प्रचार हेतु
4. आर्य समाज शिकागो - सम्मेलन के आयोजन हेतु
5. पंडित नारायण हरपाल, श्री सात्विक रचाकुला, श्रीमती विनीता कोचर एवं श्री सुमित कोचर, श्री अरुण कुमार - आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रकल्पों में विशिष्ट योगदान हेतु

इन सभी महानुभावों का सम्मान कर अमेरिका सभा को अत्यंत गौरव की अनुभूति हुई।

प्रेम-सौहार्द के वातावरण में आगामी सम्मेलन 16-19 जुलाई, 2020 को, अमेरिका के नॉर्थ कैरोलिना राज्य में होगा। इसी घोषणा के साथ सभी महानुभावों का धन्यवाद करते हुए सम्मेलन संपन्न हुआ।

- ***विश्रुत आर्य, प्रधान, अमेरिका सभा***

श्रावणी उपाकर्म एवं वेद प्रचार

आर्य समाज पंखा रोड सी ब्लाक, जनकपुरी का श्रावणी एवं वेद प्रचार सप्ताह 15 से 24 अगस्त तक आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर कुंवर उदयवीर आर्य के भजन एवं स्वामी विषवंग जी और सुश्री कल्पना आर्या के प्रवचन होंगे। आर्यवीर/वीरांगना सम्मेलन 18 अगस्त को, आर्य महिला सम्मेलन 21 अगस्त को और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह 24 अगस्त, 2019 को आयोजित किया जाएगा। समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ. स्वामी देवव्रत जी सरस्वती करेंगे। - ***रमेश चन्द्र आर्य, मन्त्री***

श्रावणी उपाकर्म एवं वेद प्रचार समापन समारोह

आर्य समाज बिड़ला लाईंस कमला नगर नई दिल्ली द्वारा आयोजित श्रावणी उपाकर्म एवं वेद प्रचार का का समापन समारोह 18 अगस्त, 2019 को होगा। यज्ञ प्रात: 9 बजे, भजन श्री लाखन सिंह आर्य (मथुरा) एवं प्रवचन आचार्य यशपाल शास्त्री जी के होंगे। - ***नरेन्द्र सिंघल, मन्त्री***

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-110048

प्रधान : श्री विजय लखनपाल
मंत्री : श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री विजय भाटिया

श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

आर्य समाज मंदिर 15-हनुमान रोड़ नई दिल्ली द्वारा 15 से 24 अगस्त 2019 तक वेद प्रचार समारोह का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर 15 अगस्त को यज्ञ एवं सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार,18 अगस्त को सत्याग्रह बलिदान दिवस एवं 20 से 23 अगस्त तक प्रात: 7-30 से 9-15 तक यज्ञ, भजन प्रवचन और सायं 7 से 9 बजे तक भजन एवं प्रवचनों के कार्यक्रम सुनिश्चित हैं। 24 अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में स्कूलों और गुरूकुलों के छात्र-छात्राओं की "आदर्श महापुरूष योगीराज श्रीकृष्ण" विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। उपरोक्त कार्यक्रम में आचार्य श्यामदेव जी यज्ञ के ब्रह्मा रहेंगे तथा उनके वेद प्रवचनों के साथ-साथ श्रीमती गरिमा शास्त्री जी के मधुर भजन होंगे। कार्यक्रम के अनुसार आप सभी सादर आमंत्रित है।

- ***विजय दीक्षित, मंत्री***

वेद प्रचार मंडल उ.पश्चिमी दिल्ली के तत्त्वावधान में श्रावणी पर्व के अवसर पर

वैदिक भजन संध्या

वेद प्रचार मंडल उत्तर पश्चिमी दिल्ली द्वारा श्रावणी पर्व के अवसर पर वैदिक भजन संध्या का आयोजन 25 अगस्त, 2019 को स्वामी श्रद्धानन्द पार्क (कैप्टन सतीश मार्ग), निकट नीलाम्बर अपार्टमैंट, रानी बाग में सायं 5:30 से 7-30 बजे तक किया जा रहा है। इस अवसर पर भजन श्री अंकित उपाध्याय जी के होंगे। अतिथि के रूप में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा एवं श्री नीरज आर्य होंगे। - निवेदक :-

सुरेन्द्र आर्य प्रधान
जोगेन्द्र खट्टर महामन्त्री

नि:शुल्क योग शिविर एवं आध्यात्मिक सत्संग

आर्यसमाज मोलडबन्द विस्तार के तत्वावधान में 11 से 15 सितम्बर तक नि:शुल्क योग शिविर एवं आध्यात्मिक सत्संग का आयोजन यादी गार्डन मोलडबन्द विस्तार में किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा पं. बुधराम शास्त्री एवं उपदेशक पं. योगेशदत्त जी (बिजनौर) होंगे।

- ***गजेन्द्र सिंह चौहान, मन्त्री***

घर वापसी के सम्बन्ध में आवश्यक सूचना

आर्यसन्देश के समस्त सम्मानीय पाठकों एवं आर्यजनो से निवेदन है कि आपके सम्पर्क में यदि कोई ऐसे महानुभाव हों जो ईसाई से वैदिक धर्म में पुन: दीक्षित हुए हों अथवा जिन्होंने स्वेच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार किया हो तो कृपया उनका नाम, पता, सम्पर्क सूत्र, मो. नं. का विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल भेजें अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,15 हनुमान रोड़, नई दिल्ली-110001 के पते पर डाक द्वारा भेजें। - ***महामन्त्री***

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

11-12-13 अक्तूबर, 2019 भाग लेने हेतु

वाराणसी यात्रा

आर्यजन अपने ग्रुप का रेलवे आरक्षण अवश्य करवा लें। आपके आवास की सामान्य व्यवस्था गुरुकुलों, आर्यसमाजों और धर्मशालाओं में नि:शुल्क की जाएगी।

दिल्ली एव आस-पास के आर्यजन महासम्मेलन में सम्मिलित होने अथवा अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :- श्री शिव कुमार मदान (9310474979) श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (8010293949) श्री सुनेहरीलाल यादव (8383092581) श्री सुखवीर सिंह (9350502175) श्री सतीश चड्डा (9313013123)

निवेदक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 12 अगस्त, 2019 से रविवार 18 अगस्त, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 19 अगस्त, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: शुक्रवार 16 अगस्त, 2019

प्रतिष्ठा में,

अलवर में आर्य कन्याओं के उत्थान हेतु आर्य शूटिंग रेंज का भव्य उद्घाटन

शूटिंग के क्षेत्र में आर्य विद्यालय का नाम रोशन करें कन्याएं - सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान

आर्य कन्या विद्यालय समिति अलवर राजस्थान द्वारा 3 अगस्त 2019 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने अपने कर-कमलों से आर्य शूटिंग रेंज का फीता काटकर विधिवत उद्घाटन किया।

सार्वदेशिक सभा के आदरणीय प्रधान जी इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा इंटरनेशनल शूटर एवं इंटरनेशनल शूटिंग कोच डॉ. राजपाल सिंह जी विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। श्री राजपाल जी ने पिस्टल से शूट करके आर्य शूटिंग रेंज का शुभारंभ किया। इसके उपरांत दयानंद सभागार ने आयोजित कार्यक्रम में श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने आर्य कन्याओं को संबोधित करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य कन्या विद्यालय समिति अलवर के तत्वावधान में आर्य शूटिंग रेंज आप सबके लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताओं में भाग लेकर आर्य कन्या विद्यालय का नाम रोशन करने का आधार बनेगा और इसके साथ-साथ राष्ट्र रक्षा के दायित्व भी आप सब निर्वहन करने में सक्षम होंगे। इस अवसर पर सायंकालीन बेला में आर्य जिला उपप्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य समाज स्वामी दयानंद मार्ग में एक आयोजित बैठक में आर्य कन्या समिति अलवर के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता जी द्वारा आर्य उपप्रतिनिधि सभा अलवर की ओर से सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी को अभिनंदन पत्र भेंट कर तथा शाल उढ़ाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी ने आर्य समाज की गतिविधियों से अवगत कराते हुए आर्यजनों को बताया कि सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में आर्य मीडिया सैंटर दिल्ली, आर्य प्रतिभा विकास संस्थान, पूर्वोत्तर क्षेत्रों में विद्यालयों की स्थापना और पंचकूला में आर्य समाज के अंतर्राष्ट्रीय केंद्र की स्थापना आदि अन्य सेवा कार्य आर्य समाज अकादमी के तत्वावधान में स्वर्गीय श्री छोटू सिंह जी के 99वें जन्म दिवस के अवसर पर क्रास कंट्री दौड़ का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम आर्य कन्या समिति अलवर के कर्मठ पदाधिकारियों द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें बाल्किाओं के लिए 7 विभिन्न वर्गों में 400, 600, 800 और 1000 तथा 1500 वर्ग मीटर दौड़ का प्रावधान रखा गया था। इसका शुभारंभ भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी द्वारा किया गया। सभी विजेताओं को समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता एवं मंत्री श्री प्रदीप कुमार जी आर्य द्वारा पुरस्कृत किया गया।

- ***मन्त्री***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह